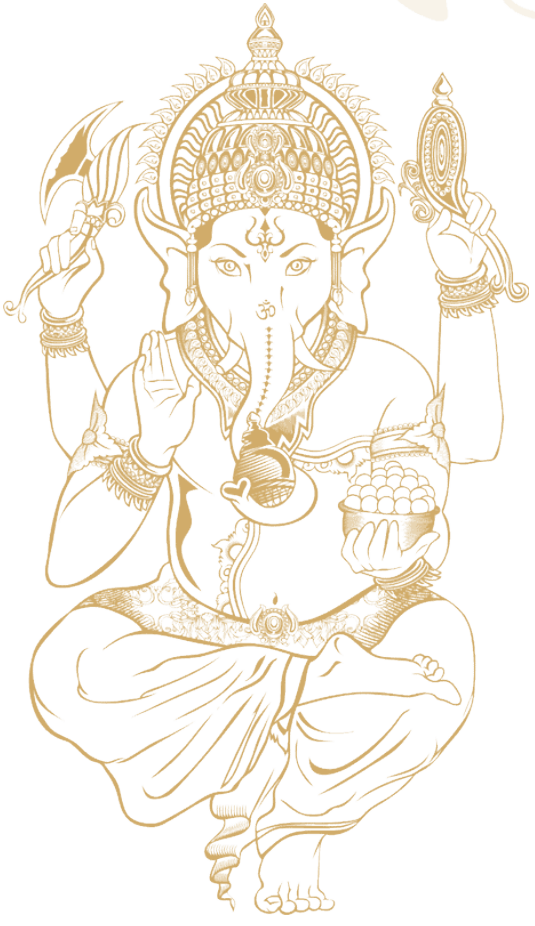

Mr tyagi

01 Dec 2026

02:28 PM

Muzaffarnagar

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120807601**

तिथि 01/12/2026 **समय** 14:28:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Muzaffarnagar **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:14:08
अक्षांश 29:28:00 उत्तर **रेखांश** 77:42:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:19:12 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	18:49:44 घं
वेलान्तर	00:11:03 घं
सूर्योदय	06:56:21 घं
सूर्यास्त	17:20:05 घं
चैत्रादि संवत	2083
शक संवत	1948
मास	मार्गशीर्ष
पक्ष	कृष्ण
तिथि	8
नक्षत्र	पू०फाल्गुनी
योग	विष्कुम्भ
करण	कौलव

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	मूषक
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	मो-मोहन
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-रजत
होरा	मंगल
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

शुक्र 15वर्ष 4मा 21दि

शुक्र

01/12/2026
23/04/2042

	00/00/0000
	01/12/2026
चन्द्र	22/04/2028
मंगल	23/06/2029
राहु	22/06/2032
गुरु	21/02/2035
शनि	23/04/2038
बुध	21/02/2041
केतु	23/04/2042

योगिनी

उल्का 4वर्ष 7मा 12दि

उल्का

01/12/2026
15/07/2031

	01/12/2026
सिद्धा	14/09/2027
संकटा	13/01/2029
मंगला	14/03/2029
पिंगला	14/07/2029
धान्या	13/01/2030
भ्रामरी	13/09/2030
भद्रिका	15/07/2031

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			23:33:15	मीन	रेवती	3	बुध	मंगल	---	0:00			
सूर्य			14:56:06	वृश्चि	अनुराधा	4	शनि	गुरु	मित्र राशि	1.26	भ्रातृ	पितृ	वध
चंद्र			16:24:20	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	चंद्र	मित्र राशि	0.87	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल			07:50:12	सिंह	मघा	3	केतु	गुरु	मित्र राशि	1.47	पुत्र	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध			28:21:10	तुला	विशाखा	3	गुरु	शुक्र	मित्र राशि	1.07	आत्मा	ज्ञाति	साधक
गुरु			02:34:04	सिंह	मघा	1	केतु	शुक्र	मित्र राशि	1.26	कलत्र	धन	अतिमित्र
शुक्र			03:58:28	तुला	चित्रा	4	मंगल	शुक्र	मूलत्रिकोण	1.20	ज्ञाति	कलत्र	क्षेम
शनि	व		13:46:47	मीन	उ०भाद्रपद	4	शनि	राहु	सम राशि	0.90	मातृ	आयु	वध
राहु	व		29:36:57	मक	धनिष्ठा	2	मंगल	शनि	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु	व		29:36:57	कर्क	आश्लेषा	4	बुध	शनि	मित्र राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

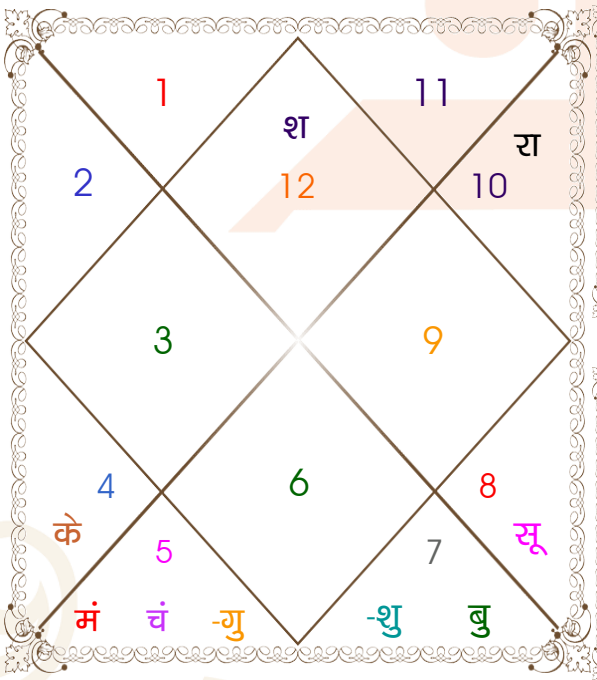

चन्द्र कुंडली

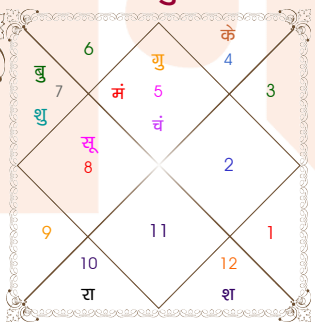

नवमांश कुंडली

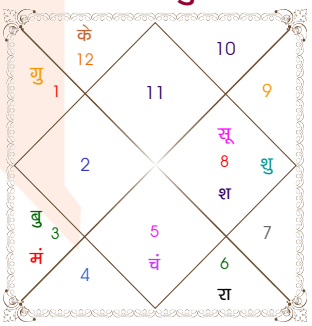

सर्वाष्टकवर्ग

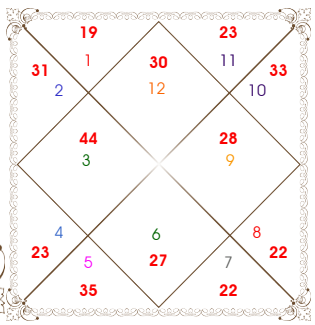

दशमांश कुंडली

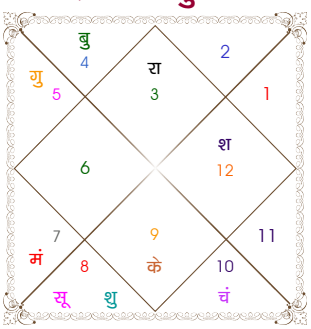

Acharya Ashok Shukla Vedpathi Shiva Shiv Astrology Research Centre
Brahmavidyapeeth Shukatirtha
9897180017
ashok.shukla.mzn@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि सिंह तथा राशि स्वामी सूर्य होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका गण मनुष्य, योनि मूषक, वर्ग मूषक, नाड़ी मध्य तथा वर्ण क्षत्रिय होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "मो" अक्षर से होगा। यथा- मोहनलाल।

आप अपने जीवन में विद्यार्जन करने में पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे। आपकी प्रकृति गम्भीर होगी तथा कार्यों को गम्भीरता से सम्पन्न करेंगे। स्त्री वर्ग के आप अत्यन्त प्रिय होंगे। साथ ही अपने जीवन में समस्त सुखों के उपभोग करने में आप सफल रहेंगे तथा श्रेष्ठ विद्वान भी आपको सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे।

विद्या गोधन संयुक्तो गम्भीरः प्रमदाप्रियः।
पूर्वाफाल्गुनिकां जातः सुखी पंडित पूजितः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक विद्या, गौ एवं धन से सम्पन्न, गम्भीर प्रकृति वाला, स्त्रियों का प्रिय, सुखी तथा विद्वानों द्वारा पूजनीय होता है।

आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय लगने वाली होगी जो दूसरों को प्रसन्नता प्रदान करेंगी। आप एक व्यवहार कुशल पुरूष होंगे तथा अपने व्यवहार से अन्य जनों को प्रभावित करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आपके मन में दानशीलता की प्रवृति भी विद्यमान रहेगी तथा अवसरानुकूल आप इस प्रवृति का प्रदर्शन करते रहेंगे। साथ ही आपका शरीर भी कान्ति से युक्त रहेगा। आप यात्रा तथा भ्रमण करने के लिए अत्यन्त उत्सुक तथा रूचिशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त राजकीय सेवा में भी आप सदैव तत्पर रहेंगे।

प्रियवाग्दाता द्युतिमानटनो नृपसेवको भाग्ये।
बृहज्जातकम्

अर्थात पूर्वाफाल्गुनी में उत्पन्न जातक प्रिय वक्ता, व्यवहारज्ञ, दानप्रिय, कान्तियुक्त शरीर वाला, यात्रा प्रिय तथा राज्य में राजसेवक होता है।

आपकी प्रकृति चंचलता से युक्त रहेगी तथा कठोर कर्मों की ओर आपकी प्रवृति अधिक मात्रा में विद्यमान रहेगी। साथ ही आप त्याग की भावना से भी ओत प्रोत रहेंगे। आप दृढ़ संकल्प के व्यक्ति होंगे तथा जिस किसी भी कार्य के बारे में एक बार मन में सोच लेंगे उसे पूर्ण यत्न तथा परिश्रम से पूर्ण करके ही छोड़ेंगे। आप में काम भावना की भी अधिकता रहेगी।

फल्गुन्यां चपलः कुकर्मस्त्यागी दृढ़ कामुको।
जातकपरिजातः

अर्थात् पूर्वा फाल्गुनी में उत्पन्न जातक चंचल, कुकर्म करने वाला, त्यागी, दृढ़ तथा कामवासना प्रधान व्यक्ति होता है।

आप वीरता के समस्त गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे तथा साहस का आप में अभाव नहीं रहेगा। आप बहुत से लोगों को आश्रय प्रदान करने वाले तथा उनका पोषण करने वाले व्यक्ति रहेंगे। आपकी आखें भी छोटी छोटी होंगी। कार्यों को दक्षता से सम्पन्न करने में आप सफल रहेंगे। इसके साथ ही यदा कदा अभिमान का भी अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करते रहेंगे। स्वभाव के भी होंगे।

शूरस्त्यागी साहसी भूरिभर्ता कामार्तोऽपिस्याच्छिरालोऽतिदक्षः।
धूर्तः क्रूरोऽत्यन्त सञ्जातगर्वः पूर्वाफाल्गुनयास्ति चेज्जन्मकाले।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वाफाल्गुनी में उत्पन्न जातक शूरवीर, दानी, बहुतों का पोषक, चतुर, धूर्त, कामातुर, कठोर हृदय और अतिघमण्डी होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा।

अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु अल्प मात्रा में रहेंगे तथा वे आपसे पराजित तथा प्रभावित होंगे। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में क्रोध तथा उग्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा। आपका सौन्दर्य आकर्षक होगा एवं शरीर में पूर्ण रूप से कोमलता विद्यमान रहेगी। आप अपने जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करेंगे तथा प्रसन्नताा पूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगे। द्रव्यों के प्रति भी यदा कदा आपकी आसक्ति रहेगी एवं कभी कभी सामान्य बीमारियों से भी आप पीड़ित रहेंगे।

सिंह राशि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव से उग्र तथा तेजस्वी होंगे। आपकी पीतवर्ण से युक्त छोटी आखें, कपोल स्थूल तथा मुखाकृति भी विस्तृत होगी। जंगलों तथा पहाड़ों में घूमने के आप विशेष शौकीन रहेंगे।

कभी कभी आप अकारण ही शीघ्र क्रोधित भी हो जाएंगे। आप अपने जीवन काल में तृष्णाओं, मानसिक चिन्ताओं से चिन्तित रहेंगे। दानशीलता की भावना भी आपके मन में विद्य मान रहेगी तथा जीवन में अवसरानुकूल अपनी इस सुप्रवृति का आप समाज में प्रदर्शन करते रहेंगे। अभिमान का प्रदर्शन भी यदा कदा आपके द्वारा किया जाएगा। स्त्री वर्ग में आप विशेष प्रिय रहेंगे तथा संतति सख्यां अल्प मात्रा में रहेगी। आपकी बुद्धि स्थिर होगी अतः आपके अधिकांश कार्यकलाप धैर्यपूर्वक सम्पन्न होंगे।

तीक्ष्णः स्थूलहनुविशालवदनः पिङ्गेक्षणोळल्पात्मजः।
स्त्रीद्वेषी प्रियमासकाननग कुप्यत्यकार्ये चिरम्।।
क्षुतृष्णोदरदन्तमानसरुजा सम्पीडितस्त्यागवान।
विक्रान्तः स्थिरधीः सुगर्वितमनामातुर्विधेयो योळर्कभे।।
बृहज्जातकम्

आपके शरीर की अस्थियां अत्यन्त ही मजबूत होंगी तथा उग्रता के भाव से भी आप युक्त रहेंगे। कार्यारम्भ से पूर्व आप अपने गले से एक विशिष्ट प्रकार की ध्वनि को निकालेंगे। आपका वक्षस्थल विस्तृत तथा दर्शनीय होगा। आप एक पराक्रमी पुरूष होंगे तथा सभी सामाजिक जन आपके पराक्रम को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त आप हमेशा सावधान तथा चौकन्ने रहेंगे तथा किसी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व उसके लिए चारों ओर परिस्थितियों का निरीक्षण करेंगे उसके बाद उसे प्रारम्भ करेंगे।

स्थूलास्थिर्मन्दरोमा पृथुवदनगलो ह्रस्वपिङ्गाक्षियुग्मः।
स्त्रीद्वेषी क्षुत्पिपासा जठररुदरजपीडितो मांसभक्षः।।
दातातीक्ष्णोळल्पपुत्रो विपिननगरतिमातृवश्य सुवक्षा।
विक्रान्तः कार्यालापी शशभृतिरविभे सर्वगम्भीर दृष्टिः।।
सारावली

आपका मुख मंडल विशाल तथा ठोड़ी का भाग स्थूल रहेगा साथ ही आप का स्वभाव अभिमानी भी रहेगा जिसका आप यदा कदा प्रदर्शन करते रहेंगे। माता के आप अत्यन्त प्रिय रहेंगे।

पिङ्गेक्षणः स्थूलहनुर्विशालवक्त्रोळभिमानी सपराक्रमः।
कुप्यत्कार्ये वनशैलगामी मातुर्विधेयः स्थिरधीः मृगेन्द्रेण।।
फलदीपिका

आप उदरपूर्ति योग्य जीविकार्जन से ही सन्तोष एवं शान्ति का अनुभव करेंगे। मांस के प्रति आपकी लोलुपता अधिक मात्रा में रहेगी तथा गहन गुफाओं तथा वनों में जाने के लिए आप हमेशा उत्सुक रहेंगे। सेवक तथा बन्धुवर्ग से भी आप युक्त रहेंगे तथा आपका वक्षस्थल विशाल रहेगा।

उदरभरणतुष्टः क्रोधनो मांसलुब्धो।
गहनगुरुगुहानां सेवको बंधुहीनः।।
कपिलनयन भग्नस्तुङ्गवक्षाः क्षुधार्तो।
विपुल सुरतसेवी सिंह राशि भे मनुष्यः।।
जातकदीपिका

क्षमाशीलता का भाव आपके अर्न्तमन में प्रारम्भ से ही विद्यमान रहेगा तथा दण्ड की अपेक्षा क्षमादान करना आप श्रेष्ठ समझेंगे। आप कुछ न कुछ कार्य करने को हमेशा तत्पर रहेंगे तथा निष्क्रिय होकर बैठना आपको रुचिकर प्रतीत नहीं होगा। साथ ही आप समयानुसार मांस

तथा मदिरा का भी प्रयोग निश्चल भाव से करेंगे। आप भ्रमणप्रिय होंगे तथा अधिकांश समय देश या विदेश की यात्राओं में व्यस्त रहेंगे। शीत से आपको अत्याधिक व्याकुलता प्राप्त होगी। आपके सभी मित्र अच्छे गुणों से युक्त रहेंगे तथा समाज में अन्य जनों के प्रति आपका व्यवहार भी विनम्र रहेगा। जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। माता पिता के आप विशेष प्रिय रहेंगे तथा आप भी उनके प्रति अपने कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे। साथ ही आप कई प्रकार के व्यसनों से भी युक्त रहेंगे तथापि समाज में आपको पूर्ण यश तथा कीर्ति प्राप्त होगी।

अचल काननयानमनोरथं गृहकलित्रच गलोदरपीडनम्।
द्विजपतिमृर्गराजगतो नृणांवितनुते तनुतेजविहीनताम्।।
जातकाभरणम्

आपकी आखें तथा शारीरिक संरचना अत्यन्त ही सुन्दर तथा आकर्षक होगी। साथ ही गम्भीर दृष्टि से भी आप युक्त रहेंगे। आप आजीवन नाना प्रकार के सुखोपभोग करने में भी व्यस्त रहेंगे।

सिंहस्थे पृथुलोचनः सुबदनो गम्भीरदृष्टिः सुखी।।
जातक परिजातः

आपका जन्म मनुष्य गण में हुआ हैं। अतः आप हमेशा धार्मिक प्रवृति से युक्त रहेंगे। ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा होगी तथा नियमित रूप से आप इनका सम्मान तथा पूजन करेंगे। अभिमानी प्रवृति से भी आप युक्त होंगे। आप अपने जीवन में धनार्जन पूर्ण रूप से करते रहेंगे तथा कभी भी इसका अभाव महसूस नहीं करेंगे। आपके मन में दया तथा करूणा का भाव सदैव जागृत रहेगा फलतः आप प्रयत्पूर्वक दीन दुःखियों की सेवा तथा सहायता करने में तत्पर रहेंगे। आप एक से अधिक कार्यों तथा कलाओं को भी जानने वाले होंगे। ज्ञानार्जन में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी तथा शरीर भी कान्तिमय रहेगा। साथ ही आपके द्वारा अन्य बहुत से लोग भी सुख की प्राप्ति करेंगे।

आप समाज के एक सम्मानित पुरूष होंगे तथा हमेशा अपार धन दौलत से युक्त रहेंगे साथ ही आप एक अच्छे निशानेबाज भी हो सकते हैं। आप गौरवर्ण से युक्त होकर नगरवासियों को वश में करने वाले होंगे। साथ ही नेत्र भी आपके बड़े होंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

मूषक योनि में जन्म होने के कारण आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा सदैव अपने कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। धनधान्य, वैभव एवं ऐश्वर्य का आपके पास

अभाव नहीं रहेगा तथा सदैव इससे युक्त रहेंगे। आलस्य करना आपको रूचिकर नहीं लगेगा अतः हमेशा सक्रिय रहेंगे। आपके अन्दर अभिमान के भाव का भी अभाव रहेगा फलतः समाज से पूर्ण आदर तथा सम्मान मिलेगा। परन्तु आप अन्य जनों पर कभी भी विश्वास नही करेंगे जो भी कार्य करवाएंगे उसे अपने ही समक्ष सम्पन्न करवाएंगे।

बुद्धिमान् वित्तसम्पूर्णः स्वकार्यकरणोद्यतः।
अप्रमतोळप्यविश्वासी नरो मूषक योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मूषक योनि का जातक बुद्धिमान, धनवान, स्वकार्य में तत्पर, गर्वहीन तथा किसी पर भी विश्वास न करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नही रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने

के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

आपके लिए ज्येष्ठ मास, तृतीया, अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां, मूल नक्षत्र, धृतियोग, बवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा मकर राशि में स्थित चन्द्रमा अशुभ फलदायक हैं। अतः आप 15 मई से 14 जून के मध्य 3,8,13 तिथियों, मूल नक्षत्र, धृतियोग तथा बवकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर तथा मकर राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शरीर की सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक या शारीरिक कष्ट हो रहे हों, व्यापार नौकरी पदोन्नति या अन्य कार्यों में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव सूर्य की आराधना करनी चाहिए तथा प्रातः काल अर्ध्य भी देना चाहिए। साथ ही रविवार का उपवास भी करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा कार्य में भी सफलता प्राप्त होगी। आप के लिए सोना, माणिक्य, रक्त पुष्प, रक्त वस्त्र तथा गेहूं, गुड़ इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना भी शुभ प्रभावों की वृद्धि करेगा तथा अशुभ फलों में न्यूनता करेगा। इसके अतिरिक्त सूर्य के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शांति प्राप्त होगी तथा लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।